

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

दशरत्न वज्राचार्य सुरत श्री महाविहार

II-234

कं
१

ॐ नमो एवमत्रया य ॥
भर २ विमल प्रसागर
मल २ विमल स्कं
~~आल ७ ध्यो ध्यो ध्यो~~
~~न ७ ध्यो नमो एवमत्रया~~

ॐ स्वस्ति ॥ ॐ नम
महाजयहुं ॐ नम
धमहा वजहुं ॥ ॥
~~धो नमो एवमत्रया~~
~~विप्रमान ध्यो ध्यो~~ किरी

हु ॥ १ ॥ ॐ नमो भर २ विमल प्रसागर महा वजहुं नमो एवमत्रया
~~॥ आल ७ ध्यो ध्यो ध्यो ध्यो ध्यो ध्यो ध्यो ध्यो ध्यो ध्यो~~
~~प्रमान ध्यो ध्यो~~ ॥ २ ॥ ॐ नमो एवमत्रया विमल स्कं धमहा वजहुं ॥
~~आल ७ ध्यो ध्यो ध्यो ध्यो ध्यो ध्यो ध्यो ध्यो ध्यो ध्यो~~
~~धो नमो एवमत्रया~~ ॥ ३ ॥

五

[illegible]

लं काल सर्वहृती क्रतेज प्रभकेतु राज यतथा गता ॥ ५ ॥
~~॥ श्री गौनाया पुन्ये नये ॥ ६ ॥~~ ॥ ६ ॥ ॥ ३ ॥ नमो यदुमदुल विद्वधयमान्यतथा गता ॥ ७ ॥
~~॥ श्री गौनाया पुन्ये नये ॥ ८ ॥~~ ॥ ८ ॥ ॥ ३ ॥ नमो यदुमदुल विद्वधयमान्यतथा गता ॥ ९ ॥
 सर्वधर्मपुन्य २ प्रतिभास विनरदित्येह्यरत्येज ह्येनवप्र

कं
३

भकेनुराजायतथागताय ॥ ~~ध्वं वीनलाननामंभी वीनपडला~~
~~धुं ॥ ८ ॥~~ उं नमो भगवते अशोभ्यतथागताया संस्पे फलं पु
आय ॥ ~~ध्वं वीनाया पुं यत अकर न अकृतीति धर्मयान~~
~~तयागुसर्वपापनाशमुपुन ॥~~ अकृती कृपाम श्री गृध्रध्वजे
~~सं नोपलक्षणममुपुन ॥ ९ ॥~~ उं नमो लोकमुनीयतथागताय

किं

ताय ॥ ~~ध्वं वीनाया पुं यत अकृती सहस्रमसतयापापमोचन~~
~~मुपुन ॥ १० ॥~~ उं नमो तेजससंत अभवा सविजित संग्राभी
यतथागताय ॥ ~~ध्वं वीनाया नः स्वपयात पुं कुरियाता पाप~~
~~मोचनमुपुन ॥ ११ ॥~~ उं नमो भगवते कृष्ण चक्र श्री सासवा
वीरवीर सासत सहस्रपारमीता सर्वसंपूर्णतथागताय ॥

कं

४

~~अदं वो नामं या पुं च न गुणित पुं च ना वि त द क वो ना व्यं पुं च द~~
~~ई ॥ १२ ॥~~ ॥ ॐ नमो च द स न सो ह वि द्दि त धर्म पा नी वि ज
य थ र त था ग ता य ॥ ~~अदं वो ना या पुं च न पं च ना हा वा प अ~~
~~ही ती ड क के ड न पु पु त ॥ १३ ॥~~ ॥ ॐ नमो भ ग व ते म हा र त
ध र्मी संपु र्णी त था ग ता या अ हे ते सं म्य क्त्वं पु था य ॥ ~~अदं~~

कि र्ति

~~वो ना या पुं च न गुणित पुं च ना वि त द क वो ना व्यं पुं च द~~
~~ई ॥ १४ ॥~~ ॥ ॐ नमो भ ग
व ते म हा र त ध र्मी संपु र्णी त था ग ता या अ हे ते अ जी कि र
न प्र भ के तु र जा व त था ग ता मा अ हे ते सं म्य क्त्वं पु था य ॥
~~वो ना या पुं च न गुणित पुं च ना वि त द क वो ना व्यं पुं च द~~
~~ई ॥ १५ ॥~~ ॥ ॐ नमो भ ग व ते न व न प ति सं पु थ क ति नां

कं
५

युतस्तसह भानां गणा न डी धालू को पु मा नोत था गत की ती ना
॥ ~~धकं वो ना या पुं ए नं हों सा कर्म या ना या पाप मो च न जु यु व~~
॥ १६ ॥ उं न मो भगवत्प्रे ए न ड स्त्रि व ने त्र त था गता या अ हं ते सं
स्य क्से पु धा य ॥ ~~धकं वो ना या पुं ए नं हों सा कर्म या ना या पाप मो च न जु यु व~~
लि ॥ १७ ॥ उं न मो भगवत्प्रे धर्म स मु द्रु सर्व से च धर त था

कि र्ति

गता या अ हं ते सं स्य क्से पु धा य ॥ ~~धकं वो ना या पुं ए नं हों सा कर्म या ना या पाप मो च न जु यु व~~
~~दो ह या ना या पाप मो च न जु यु व~~ ॥ १८ ॥ उं न मो भगवत्प्रे आ
यु क र स धा र त था गता य अ हं त प सं स्य क्से पु धा य ॥ ~~धकं वो~~
~~ना या पुं ए नं हों सा कर्म या ना या पाप मो च न जु यु व~~
~~ने न पु व~~ ॥ १९ ॥ उं न मो भगवत्प्रे ऐ वं सर्व त था गत वी ह र ती

कं
६

ह्रुईउहेतुच्छा श्री यतथागाताया आहं वि संम्यक् संगुथाय
नमो ॥ ~~यकं बोनाया पुने नंतथागातायात नमस्कार या नागु ॥~~
२० ॥ उँ आह्वी सरना पुजस्यात्मक त्रिप्रताय नमो वज्र धारु
धिकल्प भद्रममुदे नम वा नु कुरु सर्वसीध्वी पुय हं ॥
~~यकं बोनाया पुने नंतथागातायात धारु बोना न ज्ञान व स द यो वि~~

किं

॥ २१ ॥ उँ वज्र क्रोध महा श्री हेरु कहुं फल ॥ उँ पु सु २ लोहं फलः
उँ अक्रात फयमांत फः हन २ मर्थ भिभा हुं फलः उँ पमांत फ फलत
महा कु थह मयी पः हु लु २ हुं फल ॥ ~~यकं बोनाया पुने नंतथागातायात धारु बोना न ज्ञान व स द यो वि~~
~~नयमो वनगु गुगानं वन ला पार प मि र गु ॥ २२ ॥ उँ वज्र कि~~
लि कि लाय स प वि ध्र त्यं हुं फल ॥ उँ गु हे शान हेरु क गु हे शान

कं

८

कोतीस्वोत्वंममगेगीनिरुल्लु २६ भ्यो फुत् ॥ ~~यकं पो ना या पुं नं~~
~~सुखावति प्रातः शुभ ॥ २३ ॥~~ उं कजुवंथ सर्व दुस्तान् २६ फुत् ॥ उं कजुम
हागुरुमवीसिधी २६ फुत् ॥ उं हिं प ज्ञात क वजु को थ ह य जीव
२६ फुत् २६ फुत् ॥ काम दे व ज्ञात नृ ज्ञात न ॥ २४ ॥ उं स
वत आगत उ स्त्री घ चातु मिती स्वा हा ॥ उं सर्वत थागत धातु

किं

विभुषिते अधी म्याहा ॥ ~~यकं पो ना या पुं नं र गत शुभ ॥ २५ ॥~~ उं
नमो भगवते ऐपं सर्वत थागत विहरती स्मर्दु केतु ध्वज श्री य
त थागता या अहंते संम्यक्से वुधा य ॥ ~~यकं पो ना या पुं नं थ य म न~~
~~कामना पूरन शुभ ॥ २६ ॥~~ उं नमो आनिष्टा नाय प्रज स्यात्तु क
प्रसाय वजु धार शुषिक स्य च दु स मुं दे न वार रु क रुः सर्वमी

६
८

विषेय हूं भो फत् ॥ ३ ॥ आ कोत कज मति कः ह न २ मथ भु भो हूं फत्
॥ ३ ॥ प ज्ञा न्त क हत मा हा कोत ह य गृ व ह लु २ हूं फत् ॥ ~~अ न वे मा~~
~~पा उ च न स व को र न ज र प ॥ २७ ॥~~ ॥ ३ ॥ न मो क ज कि ली कि ला य स
व वि श्व वे हूं फत् ॥ ३ ॥ गु जे दान श्री हे क को ती स्व री वेः म म यो गि र
लु २ हूं फत् ॥ ३ ॥ प ज वं थः स र्व दु ख न हूं फत् ॥ ३ ॥ प ज स र्व दु ख न

कि री

हूं फत् ॥ ३ ॥ प ज दु ख न को थ ह स्ता र को थ ह य ग्री व हूं फत् ॥
३ ॥ हूं फत् ॥ ~~काम दे व मंत्र ॥ २८ ॥~~ ॥ ३ ॥ प ज म हा गु रू स र्व सि धि हूं
फत् ॥ ~~काम दे वा मं द ल मंत्र ॥ २९ ॥~~ ॥ ३ ॥ हिं प ज्ञा न्त क मू व ज को
थ ह य ग्री व ह लु २ हूं फत् ॥ ~~काम दे व मंत्र ॥ ३० ॥~~ ॥ ३ ॥ स र्व त थ
ग त र् र स्ती ष था तु मि ती स्वा हा उ त था ग त था तु वि नु वि ते

ॐ

ॐ

अथिहितेहुं फत्स्वाहा ॥ ~~ध्वमंत्रो नो नायापमा न आकाशव~~
~~सिंगायमयु ॥ ३१ ॥~~ उँ आः नानावैलो बनहुं उँ आः अजो मे
हुं फत् ॥ उँ आः एत संभवहुं ॥ उँ आः अमृतां भवहुं ॥ उँ आः
अमो यमिषिहुं ॥ ~~पुलि पंचपुचयामंत्र ॥ ३२ ॥~~ उँ आः पु
चविपस्वीयहुं ॥ उँ आः सीषिहुं ॥ उँ आः विम्व भुवहुं ॥

किं री

उँ आः फुफु छन्दहुं ॥ उँ आः फन कमु नीहुं ॥ उँ आः कास्य
वायहुं ॥ उँ आः साको मुनीयहुं ॥ ~~भुमी सप्तपुचया कार्त्तिकी~~
~~मंत्र ॥ ३३ ॥~~ उँ आय्या वलो कित्पे स्वरहुं ॥ उँ आय्या मैत्री य
हुं ॥ उँ आः आकाशग नेहुं ॥ उँ आः संमंत भट्टेहुं ॥ उँ आः
व्यपा नीहुं ॥ उँ आः मेजु श्री कुमार भुतेहुं ॥ उँ आः सर्व नी

कं
१०

वर्निविस्वंभीहं ॥ उँ आः दितिगभेहं ॥ ~~शुती अहो विस्तार~~
~~वावाही मंत्र ॥ ३४ ॥~~ उँ नमो साके मुनयतथागताया अरहं
ते सम्यक् संगुथाय ॥ तदेथा ॥ उँ मुनिश्च महा मूनी साय मूनी
प्रस्थाहा ॥ ३५ ॥ ~~चक्रे वो ग नं उतम आव कसा क्य मुनियाः~~
~~हीदप्रपू ॥ ३६ ॥~~ उँ नमो भगवते अथोभ्यायतथागता

किर्ति

या अहंते संम्यक् संगुथाय ॥ तदेथा ॥ उँ कं फनी शरो वनीश्च
योच निश्च संग्राहानिश्च प्रतीहृतः हनश्च सर्व कर्मान् परं पर
प्रतिम सर्व स्थापानां च स्थाहा ॥ ~~चक्रे वो ग नं उतम आव कसा क्य मुनियाः~~
~~हीदप्रपू ॥ ३६ ॥~~ उँ नमो भगवते आर्य भैषय्य गुरु वे
दुर्ग्य प्रभके गुरुजायतथागताया अहंते संम्यक् संगुथाय ॥

ॐ

५२

सुयु॥३५॥ॐमनिपदेहुं॥ॐवज्रपानिहुं॥ॐअलपंचनवी
ॐवाक्यदेनम॥ॐचन्द्रमहारेषनहुंफत्॥ॐतारेतुतारेद्वरेस्वा
हा॥ॐमारिचियस्वाहा॥ॐपञ्चार्द्धिनिषाविमल्वेहुंफत्॥~~ध्वमं~~
~~अपोनापुलसाचोपापमूललुखासतलसंभोसोमयुय~~
~~नदु॥४०॥ॐमनिधनीपञ्चीनीपहापुनीसरेरकारेवा~~

किं

माहुंहुंफत्स्वाहा॥ॐअमृततेरअमृतवरेरपुवरविभुध
हुंहुंफत्स्वाहा॥ॐअमृतविस्तोकिनिगर्भसंरक्षोनीआक
षनिहुंहुंफत्स्वाहा॥ॐअररसमृगाइदियवरविस्व
धनीरुचरेहुंहुंफत्स्वाहा॥~~ध्वकपोमहाभुतपेतपिता~~
~~यआकाशमयमदु॥४१॥ॐनमोएतत्रयाय॥ॐनमो~~

कं

१३

अगवतेसाकेसु नयतथागताया अहंते संस्य कसं वृथा य ॥ त
दिथां ॥ ॐ अगिते २ अपरागिते ॥ जय पश्चिमी श्री अवलोकीते
कर २ महासमयसिद्धी ॥ २ महावोधिसे नृविजय स्मर
२ असमाकं समयवोधिस्वाहा ॥ ॐ ह्रीं मोहिनिस्वाहा ॥ ॐ मु
नि २ महासूनिस्मरे स्वाहा ॥ ~~धर्मेश्वरी कन्या मुदितो व~~ किरी

~~काथ्यमंत्रवागावकुलसाहसपतनतावपनिगुरावती वने~~
~~मुग्धा लुके मोक्षोपदसाई ॥ ४२ ॥ ॐ नमो मंजु श्रीयनम ॥~~
~~तु श्रीयनम ॥ उत्तम श्रीयनमः स्वाहा ॥ ॐ आः ॥ धर्मेश्वरी~~
~~वोना ४५ दूतयातसां ववो लज्जकयातसां लज्जकयात~~
~~धिमाना प्रमानपुंयदर्शन ॥ ४३ ॥ ॐ नमो भगवते रत्नकेतु~~

कं
१४

एजायतवागताया अहं ते संस्पृशं वृथाय ॥ तदेवा ॥ उं ह्ये २ म ह्य
त्रैरत्नवीजयस्याहा ॥ उं नमो ५ सा ङो फ च क्र का ल स र्व ए त्रि त्र
या य ॥ उं द हं द क्ष सः स र्व पा प वि ह्व धनी य स्या ह ॥ ~~चकं वी न~~
~~का पू य दे व छ वा फ र्ज ला न ल क षि प्र मा न पू य द ॥ ४४ ॥ उं~~
वि पू ल ग र्भ म वि प्र भे त या ग न नि द सा म वि सु प्र भ वि म ल कि र्ति

मा ग नि ग भी र हं २ ५ य वि लो कि त गु ण भु वि कृ ते ग भ म्पाः
ह्य ॥ ~~चकं वी न सा अ र्ध ला न स त र त ल न द गु व ॥ ४५ ॥ उं म~~
~~नि क र्ज हं ॥ चकं वी न न धा न को री या ह द य गु ल ॥ ४६ ॥ उं षे च~~
~~न हं ॥ चकं वी न या म न पा ल स र्व सी धी ॥ ४७ ॥ उं न मी न ग प त~~
प्र सा पा र मी ता ये उं न ट त नि ज र्ई रि मी री मि सि मि न य २ उं न

कं

१६

मनालगु ॥ ५० ॥ ॐ ईहोः सूष्य २ विमूष्य २ ओतिरंगपी रंगपिर
पिनः वसूष्यरं अअआ ॥ ॐ विरस्मि २ स्वाहा ॥ ~~ध्वो ना धा पुं मे न~~
~~मपुष्यात सां लग यजुषु व मपुष्य व ध्या विज मृदु क मो च न उ पु~~
व ॥ ५१ ॥ ॐ धर्मा हेतु पभा वहेतु ते पांतथागत हे वतं त्य पां व
जोनिरो व म वं वादि महा अवने ॥ ~~ध्वो ना धा पुं मे न लो मा त~~

किं ही

~~धो नाथा स कला न स पूल क्षा न नं सं जु गत जु पुष ॥ ५२ ॥ ॐ सितो~~
~~तप वे अप रणी ते स वं गुहा मा वः हन २ हं कतु स्वाहा ॥ ध्वं धो~~
~~ग नं महा पती गी रा यामं वं जु लो ॥ ५३ ॥ ॐ वै द्य वं जु को ध्या य~~
~~हृ रू रति कूर वं ध २ हन २ अमृ तप हं हं कतु ॥ ध्वं धो ना नं वं जु~~
~~पा नी जो ग धा र नि ॥ ५४ ॥ ॐ तारे तू तारे मे म आयु पूं पक्षान~~

कं
१७

पुष्टि कुरु मन्त्राह ॥ ~~यके वो गानं सप्त लोचनीता राया चारिनी ॥~~
५५ ॥ उं नमो सर्वतथागत अवलो कित्ये उं से म न र २ है ॥ ~~स्व~~
~~मंत्रमहा वृषधनथासपुजासोयमपेन ॥ ५६ ॥~~ उं नमो
भगवते क्युं था सारा पुवर्तनतथागता प्राअर्हते संस्पक्षं
थाय ॥ ते ध था ॥ उं वज्रे रमहा वज्रे महातेजे महावीर्या वज्रे स

किरी

वक मी न महावोधि चितवजु महा वोधि मन्त्रा वक्र सप्त वज्रे स
वक मी अवनी विस्व धनि वज्रे स्वाहा ॥ ~~पुती वो ना पूजा मात दा~~
~~पुं य मा मन्त्रा मनु ॥ ५७ ॥~~ उं नमो स मन्त्र पुधानां अक्षम धर्म धा
तु का मी गती गता नो सर्वथा अख अं अः सं सः हे हः रं रः
सं वः स्वा हाः रं र स्वाहा ॥ ~~यके वो नाने आवक वं सो वन~~

६

१८

~~साधारणी मंत्र जुल ॥ ५८ ॥~~ ॐ नमो सर्वतथागतमाहजोष्य होर
 हुं ॥ ~~नमो नान अनुतर महा यजुजोग नाम हृदय जुल ॥ ५९ ॥~~
 ॐ नमो गगवते सर्व दुर्गती परिहो धन सर्व पाप विह्व धन्य
 सुख विदु ध्य सर्व कर्मा वर न विह्व धन्य स्वाहा ॐ सर्व वि

किं तु

त् सर्व आवर न विह्व धने स्वाहा ॥ ~~वे च विं सती काम हवे हो~~
~~नमो नान जुल ॥ ६० ॥~~ ॐ अ आ ० सर्वतथागत हृदयः हार २ ॐ हुं
 हो ० भगवान् नान मुर्ति वागी होर महा वाच सर्व धर्मो गग नाम
 ल सुपरी सुधः धर्म धातु गभ आ ॥ ~~नमो नान राज नाम नमो~~
~~नो या कर्मे नमो नाना नि जुल ॥ ६१ ॥~~ ॐ यजु सव सस प्र मनु

कं
१८

पालयः अमुमतोते नो प्रतिस्थ दिव्यमे नवमृत्युषोम्य भवः
पयोम्य भवः अनुरगतम्य भवः सर्वजीविमे प्रपद्य सर्वकर्म
सुखम्य पीतः श्रीये कुहंः हूं हूं हहहहोः भगवन सर्वतिथागत
पञ्चमाम्य मे च वरिं नवे महा सम य सत्य आ ॥ ~~चकं बोना नं~~
~~सता दार नो शु~~ ॥ ६२ ॥ उं मुनि २ मह मुनि स ह्या हा ॥ उं

किर्ति

मनि पने हूं ॥ उं च नृ माहा रो वन हूंः उं तो नृ तो स्वाहा ॥ धृती मे
~~अंत का ल ग पु के न सा दून र ना या य मा ल मो दि नु मु प ॥ ६३~~
उं न मो र न च या यः उं न मो भग व त्प आ र्थे शा न वे लो च न वृ ह
ए जा यः त था ग ता या ॥ ~~चकं बो ने स र्वा शा न उ त्प ति नु मु प ॥ ६४~~
उं न मो स र्व त था ग त्प न्य अ र हं त्पे स म्प क्तं पु ष्पा य ॥ उं न

कं
२०

मोसर्वतथागतेभ्यः अर्हते संस्पृष्टं वृथा य ॥ ॐ नमो आर्या
वलोकिते स्वराय यो धि सत्याय महासत्वाय महाकावरी
काय ॥ तदेवा ॥ ~~यं वी नानं चीतस्थी रजुयु ॥ ६५ ॥ ॐ धारं~~
~~धिरि २ धूरु २ ईह व क वर्तः चार २ पचार २ कुमु मे २ वल ३ ई~~
~~मिलि चिती जो लनः क व न य म्याहा ॥ ६६ ॥ ॐ नमो आर्या~~

किरु

~~स्वरा धारि गुल ॥ ६६ ॥ ॐ आपजु धु क हुं ॥ यजु आर्य न न ह~~
~~द प्रगुल ॥ ६७ ॥ ॐ आ म हुं ॥ मेगु श्री कृ ह द न गुल ॥ ६८ ॥ ॐ आ~~
~~मणि प म हुं ॥ ॐ हौं किं वि लु ती न हुं कृ ॥ ॐ ज मी त क हुं कृ ॥ ॐ ज~~
~~मरा जाय सर्वदा मय पम्प दार न या द मा य द निरु हो श्री र म हुं कृ~~
~~त ल्याहा ॥ यं वी नान पंच विंशती आ वृज मे र प ॥ ६९ ॥ ॐ नमो आर्या~~

६८

२५

॥ ६६ ॥ ॐ श्रीगुरुदेव कृष्ण हं फलदा को भिजाल सं बलं स्वाहा ॥
ॐ ह्रीं ह्रूं फल ॥ ॐ वज्र वीर्यो च नीय हूं हं फल ॥ ॐ सर्वं पुण्यदा
किं निपते हं फल ॥ ॐ सर्वं पुण्यदा की नीय वज्र वीर्य न निमिष कृष्ण
लोचनीय हूं हूं फल स्वाहा ॥ ~~वज्र वीर्य न निमिष कृष्ण~~
~~लोचनीय हूं हूं फल स्वाहा ॥ ॐ वज्र वीर्य न निमिष कृष्ण~~
~~लोचनीय हूं हूं फल स्वाहा ॥ ॐ वज्र वीर्य न निमिष कृष्ण~~

किं

हिं मनिपते हूं ॥ ॐ वज्र वागहि पुण्यदा की नीय वज्र वीर्यो च नीय हूं फ
ल ॥ ~~महा कृष्ण वज्र वागहि हृदय गुण ॥ ७१ ॥ ॐ अमय यन मो स्वाहा~~
~~ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं जो न्याहा ॥ ॐ काल चक्राय हं फल ॥ ॐ हे विश्व मा~~
~~च हूं फल ॥ काल चक्राय वीर्यो च नीय ॥ ७२ ॥ ॐ ह्रीं नीय वज्र हूं न~~
~~॥ जो नीय वज्र वीर्य ॥ ७३ ॥ ॐ वज्र वागहि आवे सं सर्व दुष्टा न~~

कं
२२

हं हिं स्वाहा ॥ वसुधा री या आ वा ह न मं त्र जु ल ॥ ७४ ॥ उं दे व पि तृ व जे
हं फुत् स्वाहा ॥ उं कृ क र्ति नि दे व ग्रा य हं फुत् स्वाहा ॥ उं उं हं फुत् स्वा
हा ॥ ध कं यो नान च क रं म्व ल या जि व मं त्र जु ल ॥ ७५ ॥ उं ध र २ धार य
२ म दे २ वं ध २ हं फुत् स्वाहा ॥ उं मा स्व त प म्म सा स्व त ऐ हे हि जि न
जि फ हं फुत् स्वाहा ॥ उं वृ सूर्य त मा पि तृ म न हे मं त म य स्त्वं हं उं

किं री

२१

आ लो कि त हं फुत् स्वाहा ॥ उं ह २ हि २ पु त्रा धु क हं फुत् ॥ उं हं स्वा हा
उं आ हिं स्वाहा ॥ उं वृ ध दा कि नी य आ हिं हं ॥ ~~ध कं यो नान च क रं~~
~~न या मा सं मा या धार ने ॥ ७६ ॥ उं हिं हिं वि कृ ता न चा य हं फुत् स्वा~~
~~हा ॥ ध कं यो नान च क रं म्व ल या जि व मं त्र जु ल ॥ ७७ ॥ उं प म्म~~
दु र्त मा त दु र्मो मो द नी ज व न द्वा द य ज फ स न व द न हं फुत् स्वा हा

कं

२३

॥ ~~धर्मं श्री वापी रत्न नाम संज्ञक~~ ॥ ७८ ॥ ~~इं ग जी त वि म ना~~
~~स मु द्र न्य म हा को ष हुं क्त ॥~~ ~~धर्मं श्री वापी रत्न नाम संज्ञक~~
~~॥ ७९ ॥~~ ~~उं अ क स म र स द र स म अ हुं क्त ॥~~ ~~धर्मं श्री वापी रत्न नाम संज्ञक~~
~~मि मि ॥ म ज्ञान द्या को नी धर्म संज्ञक ॥ ८० ॥~~ ~~उं अ क स म र~~
उं आ हुं छि तु रु र सि सि ह क च री स हुं च द फ र म नं द द ग कि ल

सर्व मा र्ग य र्व हुं हुं क्त ॥ ~~धर्मं श्री वापी रत्न नाम संज्ञक~~ ॥ ८१ ॥
उं हुं हुं ॥ उं व र्ग पा नी ह म ग्री ष क र्त्त न हुं क्त ॥ ~~धर्मं श्री वापी रत्न नाम संज्ञक~~
~~को न द्या वा सि पि ल व द्य म ल ज जे तु म हा रु या र्थो प नी म न्द्रु ल~~
॥ ८२ ॥ उं शान द्या को नी अ प प्रा नी जी व ती य स्वा हा ॥ उं श्री र सो
धो र गा थु लाः धन कं मा र्ग कं थु ला रु लु र हुं ॥ उं म हा र द्यो च हुं

ॐ
२४

फुत् ॥ ॐ वसुमात कालभजा विष्णु विनायकानां हुं फुत् स्वाहा ॥
ॐ कारुण्यमहं फुत् ॥ ॐ चामुनिहं फुत् ॥ ॐ श्रीमाहा काला यं हुं
फुत् ॥ ॐ माहा कालात्री महं फुत् ॥ ॐ विनी पचंदारि रक्षसि गरी
देवि हुं लो फुत् ॥ ॐ पूर्ण अर्णो मि हू पूरुष ते हित सतु हू माय हुं फ
त् ॥ ॐ रक्षो व मयी चीतलो लपती देवि हुं ॥ ॐ नमो नगवते गरुड किं हि

जय सर्व सत्मान सर्व दहं फुत् ॥ ॐ महाक्षत्रि आर्या वर हुं ॥ ॐ धिगि रि
मि रि रि सि रि हुं ॥ ॐ धन दजु हुं ॥ ॐ वै स्वाहा ॥ ॐ वै भव नां प्र स्वाहा ॥
ॐ जम्भत जलें यु प्र स्वाहा ॥ ॐ पूर्ण नद्रा प्र स्वाहा ॥ ॐ नानि नद्रा
प्र स्वाहा ॥ ॐ कृष्णाय स्वाहा ॥ ~~चक्रै वी नान श्री लं पाणि महा नक्ष्त्री~~
~~परी गुण गुण ॥ ८३ ॥ ॐ सप्रजा नाम स्वाहा ॥ ॐ गुक्का नाम स्वा~~

कं
२५

हा॥ उं पश्चिमाय स्वाहा॥ उं विविक्कूदुलि य स्वाहा॥ उं मंजु श्रीय
स्वाहा॥ उं मंजु श्री पादे विकालि र मह का लि हं कते॥ ~~यं नो~~
~~न नथुती य मर्म पा पदे वता यामं~~॥ ८४ ॥ उं नमो स मेत वृथा
नां अचिंत रूप नि॥ ~~य मंत्र विद्या व ध य गु गु गु~~॥ ८५ ॥ उं नमो
भगवते अ हू म ह सी का प्रज्ञा पारमी ता ग र्भ॥ त दे धां॥ उं मु कि ए

३५

ने र मा हा मु ने धर्म सं क्र हाः धर्म म ह्य नि लि सर्व धर्म स लि ब्र ह्मे
धर्म॥ त दे धां॥ ह मू स्मृ तिः ज य पि ज य ध धी प्रज्ञा पार म ह्याः
हा॥ ~~यं नो नायां पुं य व र्हा भगवती यो नाती पुं य द~~॥ ८६ ॥
उं नमो भगवते पंचवीं सति का प्रज्ञा पार मि ता म॥ त दे धां॥ प्र
ज्ञा र म हा प्रज्ञा सर्व भ र प्रज्ञा पार मि ता सर्व ज्ञा न दुष्क र प्रज्ञा

कं
२५

यते सकलति कति भुवूर को न भूवूर सा २ परवर पले ० गज्जि
दुदुने स्वाहा ॥ ~~यके वो ना ध्व सं व को ना न पं च पी सती का पा न या~~
~~ति दू प दु मु ॥ ८७ ॥~~ ॥ उं न मो न ग व ते सर्व त था ग त ह द स अ नु ग ते ॥
उं क्रु गो श्री म स्वा हा ॥ ~~यके वो ना न वा न द सु ॥ ८८ ॥~~ ॥ उं न मो अ
र्य मे मु श्री यः त दे था ॥ ग ते २ पा रं ग ते पा रं ग ते को वि प्र स्वाः कि हा

हा ॥ ~~यके वो ना न द वा सा ह्य पू रं गू ना न यु ॥ ८९ ॥~~ ॥ उं न मो न ग व
ते हे क दार प शा पा र सी ता ॥ ~~यके वो ना नं तु च दं मु वि च य मु मु ॥~~
९० ॥ उं न मो न ग व ते स सं त भ द्रा य को वि स ता यः म हां को रु नी
का य ॥ त दे था ॥ न भ र स त्या म स्वा हा ॥ ~~यके वो ना न ध्व सं व उ पर~~
~~दु न ना न ध्व नि वि च ता हा पा प ना स मु मु ॥ ९१ ॥~~ ॥ उं न मो न ग

कै
३७

वते महा एतते प्रभ केतु एजायत भागताया अर्हते संम्यक्से पु
थाय ॥ ~~यकं वो नान हो साया ना पाप मो च न गु गु~~ ॥ ८२ ॥ उ न
मो भगपते माहा एत आभिव न पुष्य केतु एजायत भागताया
अर्हते संम्यक्से पुथाय ॥ ~~यकं वो नान अ कीर्ति या ना पाप मो~~
~~च न गु गु~~ ॥ ४३ ॥ उ न मो भगपते चं दे त एना प्रज द्यात्म क

कि ए

धर्मिणी गुप सुषितत भागताया अर्हते संम्यक्से पुथाय ॥ ~~य~~
~~कं वो ना पाप मो च न गु गु~~ ॥ ४४ ॥ उ
न मो भगपते पु हसित वे जी स्ति ए प्र ह सत् पि स ति प्र स त ह अ पा र
मी ना य त भा ग ता या अ र्ह ते सं म्य क्से पु था य ॥ ~~यकं वो नान का~~
~~ह दा मो ह ना द द म ना या पा प मो च न गु गु~~ ॥ ४५ ॥ उ न मो

कं

२८

अगवनेनवनवतिनां पुथकोतीनांदसमंगानदीवालुकपुमानांतध
 गतकतिनां॥~~अकेपोनावपुथभाषीतगुलितदयातकेनउरी~~
~~तपोनागुतिपुंयदुजुह॥५६॥~~उंनमोअगवनेपदसितकजुस
 मंनतथागतायोआहंतेसंम्यक्तेपुथाय॥~~अकेद्वनाःवम~~
~~सअसाजगुपकलवकयायासचर्मत्वलायाःतथागत~~

किह

~~यातमसीमेंहोपकागुःमानवतायातविद्वविपागुःधासंयो~~
~~पीतवासेअनागुःआचलहुमागुःधुतीपापयागागुःअधरम~~
~~अकर्मयागागुःकल्पन~~तथागतनःमूदीहिनेस्वस्यंकि
 ज्यातमालिधिपापापुतेकेमजिप्रथकःहंभुगुदमुपा
 पयथालुमनकाकःअभागीहृदयऐकचित्तपानप्रज

कं
२५

नगुवाचतमिगुपुवेतलः वापुमहदप्रभलतमभननगुतः ॥ १५ ॥
दसो गसलपापपुः एतका यतचित्तयागुभापवाकचित्त
संगुहिनो वैन वापधका प्रः उपपुवचलत विजपाक सुमहागु
रूपरनेखरने करिण गस यमचक्र पुवनाधा यधकः गु
प्रयाह्यतयागु ॥ १६ ॥ ॥ ॥ ॥ श्रीमसमुद्रनाम ॥

विहृ

नैला मो गो श्री शाक्य मुनी कं आकी जावनं पि का से तल ॥ १७ ॥
तुं न मो भगवत्ये वेतो चन प्र भदे तु एजा यत आग ता पा भुहते
संन्य फहं धु धाय ॥ तदेथा ॥ तुं न मो भगवते समेत भटु त आग ता
प्र वो चित्तत्वा प्र महा सत्वा प्र महा कार्नी काय ॥ तदेथो ॥ प

कं विगुवमुपवधनीयस्वाहा ॥ २ जय २ मुषे स्वाहा ॥ ३

३० नीलनाम्नाधीयगुत्वेन वनामोलकच्छिप्रानागपुत्रदुजुल ॥

१००००००० ॥ ईतोऽपि दीर्घादिनिर्वह ॥ दलपरीसमाप्त ॥ ॥

ईतोऽसंख्यत् १२८४ स्नासजिम् ॥ गते हुसको यापुति ध्रु

यानाजुलिषितम् असंख्यपापमहुः दुःखालः आमुषरमिः न

किम्

अनमोलो कनाथाय ॥ ॥

अस्वस्ति ॥ उमम् नर २ विन

नमो रत्नचयाय ॥ ॥

॥

II-234

धर्मरत्न वज्राचार्य सुरत श्री महाविहार